स्वर्णिम युग के सूत्रधार- पिताश्री ब्रह्मा

संसार में अनेक समाज सुधारक, दार्शनिक व धर्मात्मायें हुए जिन्होंने धर्म एवं कर्त्तव्य को चरितार्थ करके सर्वोत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किये और मानव समाज उत्थान के लिए प्रेरणास्रोत बने। किन्तु प्रजापिता ब्रह्मा ऐसे दिव्य पुरुष हुए जिनके तन में सर्वशक्तिमान अलौकिक शक्ति का पदार्पण था। उस अलौकिक शक्ति ने उन्हें सर्वमानव समुदाय का शांति, प्रेम, आनंद, पवित्रता से श्रृंगार करने और स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना के निमित्त बनाया। सृष्टि के प्रथम पुरुष ने जिन्होंने अदम्य साहस, निष्ठा, विश्वास से एक ऐसे स्वर्णपथ की रचना की जिस पर चलकर सर्वमनुष्यात्मायें सुख-शांति सौन्दर्य प्राप्त कर अपना भविष्य उज्जवल बना सकती हैं। स्वयं परमात्मा ने ब्रह्मा के द्वारा नई दुनिया निर्मित करने के लिए उनके तन का आधार लिया एवं साकार में कर्म करके अपने निजस्वरूप का परिचय भी दिया। ब्रह्मा बाबा ने न सिर्फ परमात्मा शिव की आज्ञा का पालन किया बल्कि गहन तपस्या, त्याग से उनके समान बन गए। वे महायोगी थे। उन्होंने अनेकों में योग की पराकाष्ठा कर उन्हें विश्वकल्याण के लिए जागृत किया। उन्होंने विश्व पटल पर ऐसे आध्यात्मिक ज्योति की आभा फैलायी जहां से हर एक व्यक्ति मनोवांछित फल मुक्ति-जीवनमुक्ति प्राप्त कर सकता है। परमसत्ता ने प्यारे ब्रह्मा बाबा को तो अपनाया ही किन्तु लौकिक जीवन में भी ब्रह्मा बाप अति निर्माण, उदारचित्त, कर्मठ और सर्वस्नेही थे। उनमें अद्भुत साहस एवं आत्मविश्वास था जो विरोधियों, निंदकों के लाख प्रतिरोधों करने पर भी सत्य पथ पर सतत् गतिशील रहे।

जी हां, चर्चा हम उस महापुरुष की कर रहे हैं जो दादा लेखराज के नाम से कलकत्ता में सुप्रसिद्ध जौहरी थे और भक्ति-भावना से ओत-प्रोत थे। 60 साल की आयु में सन् 1936 में निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने इनके तन में प्रवेश किया और उनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रख उन्हें नई दुनिया बनाने का आदेश दिया। और स्वयं उनके द्वारा दिव्य ज्ञान सुनाकर सर्व को सद्गुणी बनाने का कर्म भी किया। करांची में ओम् मंडली के नाम से संचालित संस्था सन् 1951 में आबू पर्वत पर स्थानांतरित हो गयी। उन अतीत के पलों में ब्रह्मा बाप द्वारा बोया गया विश्वकल्याण का बीज आज वट वृक्ष की तरह विस्तार पाकर विश्व के विभिन्न भागों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के रूप में विख्यात है। यहां आकर अनेक आत्माएं प्रभुमिलन की प्यास बुझाती है। तथा पवित्रता, सुख-शांति व प्रेम सौहार्द्र से श्रृंगार करती है। यह एक अनुपम विश्व विद्यालय है जो इस तमोप्रधान समाज को अज्ञान अंधकार से मुक्त कर विश्व के उत्थान हेतु प्रकाश स्तम्भ है।

प्यारे ब्रह्मा बाबा ने अपना सर्वस्व परमात्मा को अर्पित कर, तन-मन भी ईश्वरीय सेवा अर्थ बच्चों के प्यार में न्योछावर कर दिया। श्रीमत एवं शिक्षा को जीवंत बनाकर सभी के लिए प्रत्यक्ष रूप में उदाहरण बने रहे और 18 जनवरी 1969 को सम्पूर्ण बन अव्यक्त हो गए। यूं तो आज भी ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूप से हम बच्चों की सेवा में उपस्थित हैं किन्तु जब-जब स्मृति दिवस 18 जनवरी सम्मुख आता है, उस बेहद प्यार और पालना के उदगार में हम सभी ब्रह्मावत्सों के नेत्र बरसने के लिए विवश होने लगते हैं। यह अव्यक्त दिवस बाप समान अव्यक्त रूपधारी बन कर उन्हें प्रत्यक्ष करने का दिन है।

प्रजापिता ब्रह्मा सृष्टि के पुरोधा व पथ-प्रदर्शक हैं जिनको सृजनहार ने साकार में दिव्य कर्म करने हेतु स्वर्णिम युग का सूत्रधार बनाया, जिन्हें सारा जहां सदा याद करके उनकी छत्रछाया या कृपा से तकदीर की तस्वीर को संवारता रहेगा। पतित मनुष्य एवं तमोप्रधान सृष्टि को सतोप्रधान पावन बनाने का असम्भव सा प्रतीत होने वाला कार्य, ब्रह्मा बाप के सुसंकल्पों के प्रवाह से कुछ ही समय में सतयुगी सृष्टि के रूप में प्रत्यक्ष हो जाएगा। ब्रह्मा बाबा के जीवन में अनेक गुण थे। यहां पर हम केवल कुछ ही गुणों पर नजर डालेंगे।

1: बेहद का वैराग्य और महात्याग- ब्रह्माबाबा को जब शिवबाबा ने साक्षात्कार कराया, उत्थान-पतन और उनके भविष्य नारायण रूप का बोध कराया तो ब्रह्माबाबा को पुरानी दुनियां से बेहद का वैराग्य आ गया। उन्हें किसी तरह का दैहिक ममत्व नहीं रहा। देह को तो बाबा यही समझते रहे यह तो हुसैन का घोड़ा है। बाबा में त्याग वृत्ति भी बहुत थी सब कुछ साधन होने पर भी बाबा ने उन्हें बच्चों प्रति लगाया। सरल व सहज रहकर निवास भी कुटिया को ही बनाया।

2: निश्चय एवं नशा- शिवबाबा में, ब्रह्मा बाबा का अटूट निश्चय था। परंतु वे सदैव निर्माण भाव से एक बल एक भरोसे में ही रहते थे कि करन करावनहार बाबा है, सब कुछ वही कराता है। विघ्न बाधाओं में भी वे अचल बने रहे। जिम्मेवार बाप है, मैं नहीं, यह यज्ञ उनका है, हमें किस बात का फिक्र। इस विचार से वे निश्चिन्त होकर सदा सेवा पर तत्पर रहे।

3: सम्पूर्ण निरहंकारी- बाबा सदैव निमित्त और निर्माण होकर रहे। उन्हें तो यह पक्का था कि जैसा कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। बच्चों के साथ में रहकर हर कर्म पहले स्वयं करते रहे, छोटे-छोटे कार्य भी बाबा बड़े सहजभाव से करते रहे। उन्हें अभिमान ने स्पर्श तक नहीं किया। इस निरहंकारिता की विशेषता ने बाबा को सम्पूर्ण बना दिया।

4: समर्पणता व सहनशीलता- पिताश्री ने अपना तन-मन-धन सब कुछ शिवबाबा को समर्पित कर दिया। लौकिक सम्बन्धों को अलौकिक में परिवर्तन किया, कुछ सोचा नहीं क्या होगा, कैसे होगा। एक सेकेण्ड में बाप की श्रेष्ठमत प्रमाण कदम उठाया। उनमें सहनशक्ति भी अद्भुत थी। लौकिक जीवन में कभी अपशब्द नहीं सुने थे ब्रह्मा बनने के बाद क्रोध और गालियां सबसे अधिक सुनने को मिली। पवित्रता के कारण सभी ने निन्दा, विरोध किया, लेकिन सहनशीलता की शक्ति से सदा मुस्कराते रहे।

5: महायोगी ब्रह्मा बाबा- बाबा महायोगी थे। उन्हें तपस्या करने की धुन लगी थी कि हमें तपस्या कर सम्पूर्ण बनाना है। चलते-फिरते कर्म करते सतत् मनमनाभव रहते थे। रात को जागकर के भी विशेष तपस्या करते थे। उनका सम्पूर्ण जीवनकाल कर्मयोगी का रहा। इससे उनके प्रत्येक कर्मों से अलौकिकता झलकतील थी। इस तरह बाबा नंबर वन में गए जो हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत बने।

6: सर्वप्रिय थे प्रजापिता ब्रह्मा- पिताश्री सभी के अति प्यारे थे, किसी भी धर्म, जाति, वर्ण या रंग तथा कैसी भी संस्कार वाली मनुष्यात्मा हो, बाबा उसे महान आत्मा की दृष्टि से देखते थे और उसके गुणों की प्रशंसा करते

और उमंग-उत्साह दिलाते रहते थे। ना उम्मीदवार को उम्मीदवार बना देते थे जिससे वह पुनः भूल करने की हिम्मत नहीं रखता था। बाबा ने साकार में सभी को इतना प्यार-दुलार दिया कि वे सभी को अपने लगते थे और अव्यक्त में भी सभी को उतना ही प्यार करते हैं।

ब्रह्मा बाप भी पुरुषार्थ द्वारा शिव बाबा के समान बन गये। वृक्ष चाहे कितना भी विस्तार को पा जाये लेकिन उसका अस्तित्व बीज में ही है। उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। ब्रह्मा बाबा भी सदा याद रहेंगे। ऐसे ब्रह्मा बाप को शत्-शत् नमन।

सौजन्य: ब्रह्माकुमारीज्

****